एचआईवी की स्थिति का पता कैसे करें

मात्र खून की जाँच से

जाँच जिला अस्पताल एवं मेडिकल कालेज में स्थित आईसीटीसी/पीपीटीसीटी (गर्भवती महिलाओं हेतु) केन्द्र तथा ब्लड बैंक में "मुफ्त" उपलब्ध है।

भारत सरकार की एचआईवी की जाँच नीति

1. जाँच स्वेच्छा से हो।
2. जाँच के पहले एवं बाद में परामर्श अनिवार्य है।
3. जाँच रिर्पोट गोपनीय रखी जानी है।

एचआईवी/एड्स का उपचार

एड्स आज भी असाध्य (उपचार है किन्तु निदान नहीं) है, "पूर्ण एवं सही जानकारी" ही इसका एक मात्र बचाव है।

एचआईवी होने पर पूर्व में कुछ रक्त जाँचों जैसे Baseline Test एवं CD-4 Count के उपरान्त ही इसके उपचार हेतु औशधियाँ दी जाती है जिन्हें एआरटी (एंटी रेट्रो वायरल ट्रीटमेन्ट) कहते है।

एच.आई.वी. संक्रमित व्यक्ति को एआरटी औशधियों की आवश्यकता तुरंत नहीं होती। यदि आवश्यकता पड़ जाती है तो एंटी रेट्रो वायरल औशधियों का सेवन जीवनान्त तक करना होता है।

एआरटी औशधियों के सेवन के साथ मूलतः एचआईवी संक्रमित व्यक्ति अच्छा, लम्बा और स्वस्थ जीवन जी सकता है।

एआरटी औशधियाँ प्रदेश के समस्त मेडिकल कॉलेज स्थित "ए.आर.टी. सेन्टरों" में "मुफ्त"उपलब्ध हैं।

एआरटी के सेवन से जीवन अवधि लम्बी हो सकती है किन्तु उपचार की निश्ठा तथा दवा की प्रतिबद्धता की एक अहम भूमिका है।

एचआईवी पॉजिटिव व्यक्ति के अधिकार

1. समान अवसर का अधिकार
2. स्वास्थ्य का अधिकार
3. घर, संपत्ति और विरासत का अधिकार
4. शिक्षा का अधिकार
5. सभी सरकारी एवं गैर सरकारी सेवाओं का अधिकार

उत्तर प्रदेश राज्य एड्स नियन्त्रण सोसाइटी

भ। ब्लॉक, चतुर्थ तल, पिकप भवन, विभूति खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ

फोनः 0522-2721871, 2720360, 2720361

एचआईवी व एड्स

कुछ बुनियादी जानकारी

एचआईवी क्या है इसे जानो एड्स को पहचानो

HIV

Human Immuno-deficiency Virus (ह्यूमन इम्यिनो डेफिशि एन्सी वायरस)
एचआईवी एक ऐसा वायरस है जो कि केवल मानव शरीर में पाया जाता है तथा मनुष्य की प्रतिरोधक क्षमता को धीरे–धीरे कम कर देता है या नष्ट कर देता है।

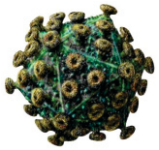

AIDS

A	-	Acquired	प्राप्त करना
I	-	Immuno	प्रतिरोधक
D	-	Deficiency	कमी
S	-	Syndrome	कई बीमारियों का समूह

यह एचआईवी की आखिरी अवस्था है जब शरीर रोगों से लड़ने की अपनी

एचआईवी कैसे फैलता है ?

एचआईवी संक्रमित व्यक्ति के साथ असुरक्षित यौन सम्बंध से।

स्त्री एवं पुरूश दोनों को खतरा है।
स्त्रियों में एचआईवी संक्रमण की संभावना अधिक है।
यौन रोंगों की उपस्थिति में एचआईवीका खतरा 10 गुना बढ़ जाता है।
गुदा मैथुन में एचआईवी होने की संभावना अधिक है।

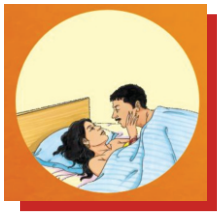

बचाव का तरीका

1. संयम
2. जीवन साथी के प्रति वफादारी
3. कण्डोम
4. जाँच

एचआईवी संक्रमित रक्त या रक्त उत्पाद के चढाएं जाने से।

- संक्रमित रक्त या रक्त उत्पाद से सबसे तेज संक्रमण होने का खतरा रहता है।
- संक्रमित रक्त चढ़ने से मनुश्य के खून में सीधा सम्पर्क हो जाता है।

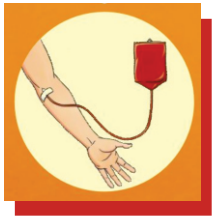

बचाव का तरीकाः

1. हमे ाा सरकारी या लाइसेन्सभुादा ब्लड बैंक से ही रक्त लें।
2. रक्त लेते समय यह सुनि चत करें कि रक्त एचआईवी मुक्त है।

एचआईवी संक्रमित सुइयों एवं सीरिंजो के साझा प्रयोग से।

सिरिंज के इस्तेमाल के बाद उसके अगले हिस्से में संक्रमित व्यक्ति के रक्त का कुछ अं ा रह जाता है जिसके पुनः इस्तेमाल करने से एचआईवी वायरस स्थानान्तरित हो जाता है। इसी तरह सीरिंजो से किए जाने वाले न ो में इस्तेमाल की जाने वाली संक्रमित सुई के साझा प्रयोग से भी यह वायरस फैलता है।

1. यह सुनि चत करे कि इस्तेमाल की जाने वाली सिरिंज नई तथा सील बन्द हो।
2. यह सुनि चत करें कि आपके द्वारा इस्तेमाल की गई सिरिंज उचित ढंग से निस्तारित / खण्डित कर दी गई है।

एचआईवी संक्रमित माँ से उसके होने वाले बच्चे को।

गर्भावस्था की स्थिति में।
बच्चे के पैदा होते समय।
बच्चे को स्तनपान कराने के दौरान।

बचाव का तरीका

हर गर्भवती माँ की एचआईवी जाँच सुनि चत करें।

एचआईवी किन तरीकों से नहीं फैलता

एचआईवी सामाजिक एवं सामान्य मेलजोल से नहीं फैलता है।
हाथ मिलाने या गले मिलने से।
एक साथ घर में रहने से।
कपड़ों के आदान प्रदान से।
भौचालय अथवा स्वीमिंग पूल के साझा प्रयोग से।
साथ खाना खाने से।
मच्छर या कीड़े मकोड़ों के काटने से।
चुम्बन से।